ओम शान्ति 15-12-13 मधुबन

रविवार अमृतवेले योग के पश्चात - दादी जानकी जी के उद्‌गार

गुडमार्निंग। आज का सण्डे बड़ा मीठा सण्डे है। एक तो हमारा बाबा आने वाला है दूसरा थर्ड सण्डे है। हरेक बाबा के बच्चे को मेरे बाबा ने थर्ड सण्डे का महत्व विश्व कल्याण अर्थ महत्व बताया है। शाम के योग का जो नियम बना के दिया है वो बहुत-बहुत वैल्युबुल है। परमात्म प्यार के प्यारे बच्चे मैं क्या अन्दर की भावनाओं को सुनाऊं। भावना यह है कि समय बहुत थोड़ा है। गति सदगति दाता मिला है। हमारे कर्म ऐसे श्रेष्ठ हो जो सतयुगी राज्य में जाना हैं मुक्ति धाम में जाना है। मुक्तिधाम में जाने के लिए ऐसा बैठे रहे, बाबा गोद बिठाय, नैन बिठाय पार लेके जा रहा है। मुक्तिधाम में बाबा ले जा रहा है। सतयुग में अपने श्रेष्ठ कर्म अनुसार आयेंगे। मेरे से कोई भी ऐसा छोटा-मोटा साधारण कर्म न हो जो मेरे पद में कोई कमी हो जाये। यह अपने में चेक करना और फौरन चेन्ज करना यह भी गिफ्ट बाबा ने दी है। जरा भी अलबेलाई में थोड़ा सा परचिन्तन में हमारे को नुकसान होगा। तो अटेन्शन रखना, टेन्शन नहीं है पर अटेन्शन रखने का यह समय है। यह अमृतवेले का निमय से इतना सुख मिला है। अमृतवेले बाबा हम बच्चों को सामने बिठा के साथ बिठा देता है। सामने बैठने से कितना बल मिलता है, फिर साथ बिठाते हैं तो सकाश सारी दुनिया को मिले। सकाश और स्नेह में कितना फर्क है। पहले बाबा स्नेह देता है फिर सकाश देता है। तो मेरे भाई-बहन कोई भी अमृतवेले को मिस न करें। अमृतवेला एक सच्ची नाव है, पार ले जाने के लिए बाबा बिठाता है। अभी दिल कहता है शान्तिधाम वासी रहकरके जैसा मेरा बाबा शान्तिधाम में बैठे अव्यक्त वतन से हम बच्चों की कितनी अच्छी सेवा कर रहा है, पालना कर रहा है और पढ़ाई की गहराई में ले जा रहा है। कल बाबा ने कहा यह पढ़ाई ऐसी है, विचार सागर मंथन करने वाली है। यह ज्ञान ऐसा है सिमरण करने से बड़ा सुख मिलता है। क्या-क्या मीठी बातें सुनाता है बाबा। ऐसी मीठी-मीठी बाते सुनाते मन को आर्डर दे दिया है मन लगाओ मेरे में। न तन में, न धन में, न सम्बन्ध में। भले समर्पण हुए है पर मन को चेक करो कि कहाँ जाता तो नहीं है। पास्ट में या प्रेजेन्ट भी जो अल्पकाल के सुख देने वाले, ना-ना बाबा एक बाबा दूसरा न कोई, बाबा ने सबकुछ दिया है। उसमें तृप्त आत्मा, सन्तुष्ट आत्मा रहने में, मैं बाबा आपको क्या बताऊं आप सब देख रहे हो। आपकी दृष्टि ने, आपकी भावना ने जी-जान को स्वीकार कर लिया है। थैंक्यू बाबा, थैंक्स मेरे परिवार को जो मेरी भावना को बाबा के द्वारा स्वीकार करते हैं। थैंक्यू, ओम शान्ति, ओम शान्ति।